चौपयी साहिब

ੴ स्री वाहगुरू जी की फतह ॥

पातसिाही १० ॥

कबयिो बाच बेनती ॥

चौपई ॥

हमरी करो हाथ दै रछा ॥

पूरन होइ चति की इछा ॥

तव चरनन मन रहै हमारा ॥

अपना जान करो प्रतपिारा ॥१॥

हमरे दुशट सभै तुम घावहु ॥

आपु हाथ दै मोहि बचावहु ॥

सुखी बसै मोरो परविारा ॥

सेवक सखिय सभै करतारा ॥२॥

मो रछा नजिु कर दै करयिै ॥

सभ बैरनि कौ आज संघरयिै ॥

पूरन होइ हमारी आसा ॥

तोरि भिजन की रहै पियासा ॥३॥

तुमहि छाडि कोई अवर न धयाऊं ॥

जो बर चहों सु तुमते पाऊं ॥

सेवक सि्खय हमारे तारियहि॥

चुन चुन श्त्रु हमारे मारियहि॥४॥

आपु हाथ दै मुझै उबरियै ॥

मरन काल का त्रास निवरियै ॥

हूजो सदा हमारे प्छा ॥

स्री असधिुज जू करियहु रच्छा ॥५॥

राखि लिहु मुहि राखनहारे ॥

साहिब संत सहाइ पियारे ॥

दीनबंधु दुशटन के हंता ॥

तुमहो पुरी चतुरदस कंता ॥६॥

काल पाइ ब्रहमा बपु धरा ॥

काल पाइ शिवजू अवतरा ॥

काल पाइ करि बिशिन प्रकाशा ॥

सकल काल का कीया तमाशा ॥७॥

जवन काल जोगी शवि कीयो ॥

बेद राज ब्रहमा जू थीयो ॥

जवन काल सभ लोक सवारा ॥

नमशकार है ताहि हमारा ॥८॥

जवन काल सभ जगत बनायो ॥

देव दैत ज्छन उपजायो ॥

आदि अंति एकै अवतारा ॥

सोई गुरू समझयिहु हमारा ॥९॥

नमशकार तसि ही को हमारी ॥

सकल प्रजा जनि आप सवारी ॥

सविकन को सवगुन सुख दीयो ॥

श्त्रुन को पल मो बध कीयो ॥१०॥

घट घट के अंतर की जानत ॥

भले बुरे की पीर पछानत ॥

चीटी ते कुंचर असथूला ॥

सभ पर क्रिपा द्रिशटि करि फूला ॥११॥

संतन दुख पाए ते दुखी ॥

सुख पाए साधन के सुखी ॥

एक एक की पीर पछानै ॥

घट घट के पट पट की जानै ॥१२॥

जब उदकरख करा करतारा ॥

प्रजा धरत तब देह अपारा ॥

जब आकरख करत हो कबहूं ॥

तुम मै मिलत देह धर सभहूं ॥१३॥

जेते बदन स्रिशटि सभ धारै ॥

आपु आपुनी बूझि उचारै ॥

तुम सभ ही ते रहत निरालम ॥

जानत बेद भेद अरु आलम ॥१४॥

निरंकार न्रिबिकार न्रिल्मिभ ॥

आदि अनील अनादि असम्भ ॥

ताका मूड्ह उचारत भेदा ॥

जाको भेव न पावत बेदा ॥१५॥

ताकौ करि पाहन अनुमानत ॥

महां मूड्ह कछु भेद न जानत ॥

महांदेव कौ कहत सदा शवि ॥

नरिंकार का चीनत नहि भवि ॥१६॥

आपु आपुनी बुधि है जेती ॥

बरनत भनि भनि तुहि तेती ॥

तुमरा लखा न जाइ पसारा ॥

कहि बधि सिजा प्रथम संसारा ॥१७॥

एकै रूप अनूप सरूपा ॥

रंक भयो राव कहीं भूपा ॥

अंडज जेरज सेतज कीनी ॥

उतभुज खानि बिहुरि रिचि दीनी ॥१८॥

कहूं फूलि राजा ह्वै बैठा ॥

कहूं समिटि भयो शंकर इकैठा ॥

सगरी स्रशिटि दिखाइ अच्मभव ॥
आदि जुगादि सिरूप सुय्मभव ॥१९॥

अब रच्छा मेरी तुम करो ॥
सि्खय उबारि असि्खय स्घरो ॥
दुशट जिते उठवत उतपाता ॥
सकल मलेछ करो रण घाता ॥२०॥

जे असिधुज तव शरनी परे ॥
तिन के दुशट दुखित ह्वै मरे ॥
पुरख जवन पगु परे तिहारे ॥
तिन के तुम संकट सभ टारे ॥२१॥

जो कलि कौ इक बार धिऐहै ॥
ता के काल निकटि नहि ऐहै ॥
रच्छा होइ ताहि सिभ काला ॥
दुशट अरशिट टरे ततकाला ॥२२॥

क्रिपा द्रशिटि तिन जाहि निहरिहो ॥
ताके ताप तनक महि हिरहो ॥

रि्धि सि्धि घिर मों सभ होई ॥

दुशट छाह छ्वै सकै न कोई ॥२३॥

एक बार जनि तुमैं स्मभारा ॥

काल फास ते ताहि उबारा ॥

जनि नर नाम तहिारो कहा ॥

दारदि दुशट दोख ते रहा ॥२४॥

खड़ग केत मैं शरनि तिहारी ॥

आप हाथ दै लेहु उबारी ॥

सरब ठौर मो होहु सहाई ॥

दुशट दोख ते लेहु बचाई ॥२५॥